राजस्थान के कोटा नगर निगम द्वारा आयोजित 'वृक्षारोपण कार्यक्रम'

21 जुलाई 2019

.....

मुझे आज कोटा नगर निगम द्वारा आयोजित 'वृक्षारोपण कार्यक्रम' में आकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। सबसे पहले, मैं इस नेक कार्य के लिए आमंत्रित करने हेतु नगर निगम के पदाधिकारियों, अधिकारियों और कर्मचारियों को धन्यवाद देता हूँ।

जैसाकि आप सभी जानते हैं कि कोटा का एक लम्बा इतिहास रहा है। यह शहर अनेक उतार-चढ़ावों का सामना करते हुए इस मुकाम पर पहुँचा है। विभिन्न क्षेत्रों में लगातार प्रगति करते हुए और नए एवं सशक्त भारत के निर्माण में अपना पूर्ण योगदान करते हुए कोटा एक बड़े शैक्षणिक केन्द्र के रूप में उभरा है जहाँ पर पूरे देश से हजारों छात्र शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते हैं।

'स्मार्ट सिटी मिशन' के अंतर्गत, भारत सरकार के शहरी विकास मंत्रालय ने पूरे भारत के 100 शहरों का चयन किया है जिन्हें स्मार्ट शहरों के रूप में विकसित किया जाना है। मुझे इस बात का उल्लेख करते हुए प्रसन्नता हो रही है कि हमारा कोटा शहर भी इनमें शामिल है।

इस शहर के विकास हेतु कोटा नगर निगम द्वारा किए गए योगदान के लिए मैं नगर निगम को बधाई देता हूँ। वर्ष 1921 में नगरपालिका परिषद के रूप में निगम की शुरूआत हुई थी और 1993 में इस नगरपालिका का उन्नयन निगम के रूप में किया गया था ताकि शहर की बढ़ती हुई माँगों को पूरा किया जा सके।

इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हमें न केवल शिक्षा के एक केन्द्रक के रूप में अपितु एक स्वच्छ और हरित शहर के रूप में अपने शहर को प्रसिद्ध करने के लिए अपनी-अपनी जिम्मेदारियाँ निभाने की आवश्यकता है। यह 'वृक्षारोपण कार्यक्रम' इस दिशा में एक स्वागत योग्य कदम है।

वृक्ष मनुष्य' के लिए जीवन स्रोत हैं। वृक्ष कार्बन डाइआक्साइड का अवशोषण तथा मनुष्य के जीवन के लिए अनिवार्य आक्सीजन छोडते हैं। ऐसा कहा जाता है कि एक वृक्ष एक दिन में लगभग चार लोगों के लिए आक्सीजन प्रदान करता है।

हमारे पर्यावरण में कम हो रहे वृक्षों के कारण हमें कुछ प्रतिकूल परिणामों का सामना करना पड़ रहा है। विश्व के औसत तापमान में लगातार वृद्धि हो रही है जिसके कारण विषम जलवायु परिस्थितियाँ, कम वर्षा के कारण सूखा, बार-बार आने वाली बाढ़ से विनाश, कृषि उत्पादन में कमी, आपदाएं और तबाही के कारण बड़े पैमाने पर जान माल की क्षति हो रही है। वस्तुत:, प्रकृति के इस प्रतिशोध ने मानव के अस्तित्व पर एक प्रश्न चिन्ह लगा दिया है।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि हमे विकास करने की आवश्यकता है जिसके बिना हम गरीबी का उन्मूलन तथा प्रगति नहीं कर सकते। परन्तु, साथ ही हमें यह भी महसूस करना चाहिए कि पर्यावरण की कीमत पर विकास नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि यह पृथ्वी पर जीवन को बनाए रखने के लिए आवश्यक है।

प्रत्येक नागरिक और समाज के हर वर्ग को शामिल करके एक सामाजिक आंदोलन के रूप में वृक्षारोपण कार्यक्रम आरंभ किया जाना अनिवार्य है। हरित क्षेत्र का विस्तार करने के लिए हम सबका ध्येय वाक्य 'एक व्यक्ति-एक पौधा' होना चाहिए।

हमने देश में वृक्षारोपण और वनीकरण बढ़ाने के लिए अच्छी योजनाएं तैयार की हैं। कम वृक्षों वाले वन क्षेत्रों में लोगों की भागीदारी के माध्यम से राष्ट्रीय वनीकरण कार्यक्रम और एक हरित भारत हेतु राष्ट्रीय अभियान, जिसका उद्देश्य भूमि की स्थिति के अनुसार वन और वृक्ष क्षेत्र बढ़ाना है, ऐसी ही दो प्रमुख योजनाएं हैं।

राज्य/राज्य संघ क्षेत्र सरकारें भी विशेष अवसरों और समारोहों के साथ ही विश्व पर्यावरण दिवस, वन महोत्सव आदि के दौरान स्थानीय लोगों तथा विभिन्न एजेंसियों के साथ मिलकर वृक्षारोपण करती हैं।

इस संदर्भ में, मुझे यहां यह कहते हुए गर्व महसूस हो रहा है कि 8,266 वर्ग किमी **'ट्री कवर'** के साथ हमारा राज्य राजस्थान देश में सर्वाधिक वृक्ष क्षेत्र वाले राज्यों में दूसरे स्थान पर है।

इस वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस को स्वच्छ वायु को बढ़ावा देने के उद्देश्य से "वायु प्रदूषण" विषय के साथ मनाया गया। इस विश्व पर्यावरण दिवस पर सभी को एक वृक्ष रोपित करने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से पौधों को रोपा गया।

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से वृक्षारोपण को जन अभियान बनाने का निर्णय लिया है जिससे स्कूल नर्सरी, शहरी वनीकरण, खाली भूमि पर वृक्षारोपण, कृषि भूमि पर बाँधों आदि को बढ़ावा मिलेगा।

यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि सरकारी कार्यक्रमों में नागरिक समाज और गैर-सरकारी संगठनों की व्यापक भागीदारी होनी चाहिए, जमीनी स्तर पर लोगों को इसमें शामिल किया जाना चाहिए और पर्यावरण संरक्षण के बारे में जागरूकता पैदा करनी चाहिए।

इस संबंध में मैं हिमालय की गोद में बसे देश भूटान का उदाहरण देना चाहूँगा जहाँ राजकुमार के जन्म का उत्सव मनाने के लिए वृक्षारोपण किया गया था। हर जगह ऐसी ही परंपराओं को अपनाया जाना चाहिए।

हमें अनेक महत्वपूर्ण अवसरों पर किसी वस्तु के स्थान पर उपहार स्वरूप पौधे देने चाहिए या पौधे लगाने चाहिए ताकि हम त्यौहारों और कार्यक्रमों को अविस्मरणीय बना सकें।

मुझे आप सबको यह बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि संसद भवन परिसर में भी समय-समय पर वृक्षारोपण कार्यक्रम चलाए जाते हैं। वस्तुत: यह एक सतत प्रक्रिया है। यह एक हरित संसद बनाने की दिशा में उठाया गया कदम है, जिसका मुख्य **उदेश्य** इसे पेपरलेस बनाना है।

कोई भी यह देख सकता है कि संसद परिसर में जामुन जैसे फलदार वृक्ष और नीम जैसे चिकित्सीय वृक्ष मौजूद हैं। यहाँ अन्य दुर्लभ प्रजाति के पौधे भी हैं जिनमें विशिष्ट चिकित्सीय गुण हैं।

कोटा के लोगों को स्वयं भी अपने शहर को हरा-भरा और पर्यावरण की दृष्टि से समृद्ध बनाने के लिए ऐसे वृक्षारोपण कार्यक्रमों में भाग लेकर पहल करनी चाहिए।

मैं कामना करता हूँ कि कोटा नगर-निगम अपने सार्थक उद्देश्यों को पूरा करे और अपने सभी प्रयासों में पूर्णतया सफल हो। मैं इस शहर की बेहतरी के लिए निरंतर किए गए प्रयासों हेतु निगम की सच्चे मन से सराहना करता हूँ।

मुझे विश्वास है कि यह संस्था अपने अच्छे कार्य को जारी रखेगी और उपलब्धि हासिल करेगी। मैं यह 'वृक्षारोपण कार्यक्रम' आयोजित करने के लिए नगर-निगम का धन्यवाद करता हूँ।

आइए, आज हम सब मिलकर यह प्रतिज्ञा करें कि हम सभी अधिक से अधिक वृक्ष लगाकर और उनका संरक्षण करके अपने पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए अधिकाधिक प्रयास करेंगे क्योंकि: 'जब होंगे पेड़ सुरक्षित, तभी होगा हमारा कल सुरक्षित'।